यह पहले स्पष्ट हो चुका है कि हेक्सचर-ओहलिन का सिद्धान्त प्रतिष्ठित सिद्धान्त को गलत सिद्ध नहीं करता है वरन् उसके पूरक के रूप में आधुनिक सिद्धान्त को प्रस्तुत करता है। इन दोनों में प्रमुख अन्तर यह है कि जहाँ प्रतिष्ठित सिद्धान्त इस बात का उत्तर देने में असफल है कि दो देशों में तुलनात्मक लागत में अन्तर क्यों होता है आधुनिक सिद्धान्त ने इसका सन्तोषजनक उत्तर दिया। हेक्सचर ओहलिन ने अधिक मौलिकता के साथ विदेशी व्यापार के मूल आधार को प्रस्तुत किया है और उन कारणों को स्पष्ट किया है जिनके कारण दो देशों की तुलनात्मक लागत के अनुपात में भिन्नता होती है।

ओहलिन ने साफ किया कि विदेशी व्यापार केवल अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार की ही एक दशा है। उन्होंने बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पत्ति के साधनों में भिन्नता होती है तथा भिन्न वस्तुओं के लिए विभिन्न साधन अनुपातों की आवश्यकता होती है। इसे ध्यान में रखते हुए एक क्षेत्र उन वस्तुओं के उत्पादन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है जिनमें उन साधनों का अधिक अनुपात में प्रयोग किया जाता है जो वहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। अतः साधनों में भिन्नता के कारण विभिन्न देशों में उत्पादन की क्षमता भी भिन्न भिन्न होती है।

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि विभिन्न देशों में उत्पत्ति के साधनों की उपलब्धता में विभिन्नता के कारण वहाँ उत्पादन में भिन्नता होती है। इसे एक उदाहरण से अच्छी तरह से समझ सकते हैं - मान लिया जाय कि दो क्षेत्र X और Y हैं। X क्षेत्र में पूंजी प्रचुर मात्रा में है तथा श्रम कम मात्रा में है तब X में पूंजी अधिक होने के कारण सस्ती होगी और श्रम मंहगा होगा। अतः X में मशीनों का निर्माण सस्ता होगा जिसमें अधिक मात्रा में पूंजी लगती है एवं गेहूं मंहगा होगा जिसमें श्रम अधिक लगता है। अब अगर Y क्षेत्र में श्रम अधिक मात्रा में उपलब्ध है और पूंजी कम मात्रा में उपलब्ध है तब Y क्षेत्र में मशीनें मंहगी होंगी क्योंकि वहां पूंजी कम मात्रा में उपलब्ध है और गेहूं सस्ता होगा क्योंकि वहां श्रम अधिक मात्रा में उपलब्ध है। इस प्रकार दोनों क्षेत्रों में विभिन्न वस्तुओं की कीमतों में भिन्नता होगी। इस आधार पर कहा जा सकता है कि X को उस वस्तु के उत्पादन में तुलनात्मक लागत का लाभ मिलेगा जिसके उत्पादन में उन साधनों की अधिक आवश्यकता होती है जो वहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार Y को उस वस्तु के उत्पादन में लाभ होगा जिसके उत्पादन में उन साधनों से अधिक आवश्यकता होती है जो वहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

ओहलिन की नजर में व्यापार की पहली शर्त यह है कि वही वस्तु एक क्षेत्र में अधिक सस्ती दर पर पैदा की जा सके। ओहलिन ने साफ किया कि वस्तु के उत्पादन की मौलिक लागत में भिन्नता के कारण विशिष्टीकरण

Scanned with CamScanner

नहीं किया जाता वरन् वस्तुओं की अन्तिम कीमतों में भिन्नता के कारण ही विशिष्टीकरण और व्यापार होता है। वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण केवल उत्पादन की लागत द्वारा नहीं वरन् मांग द्वारा भी होती है। इस प्रकार ओहलिन का सिद्धान्त मांग एवं पूर्ति दोनों पक्षों पर विचार करता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दो क्षेत्रों में कीमतों में सापेक्षिक अन्तर इसलिए होता है क्योंकि दोनों क्षेत्रों में मांग एवं पूर्ति की दशाओं में अन्तर होता है। केवल निम्न दशाओं में दो क्षेत्रों में सब वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतें समान होंगी।—

① जब दोनों क्षेत्रों में उपभोक्ता की आवश्यकताएं और अधिमान समान हैं
② जब दोनों क्षेत्रों में उपलब्ध साधन समान अनुपात में हों जिससे दोनों क्षेत्रों की पूर्ति की दशाएं समान हों।
③ यदि उत्पत्ति के साधनों में कोई अन्तर होता है तो मांग की दशाओं में भी उतना ही अन्तर होकर क्षतिपूर्ति होजाती है तथा सन्तुलन स्थापित होजाता है।

ओहलिन ने अपने साधन अनुपात सिद्धान्त के समर्थन में अमेरिका और भारत में होने वाले व्यापार का उदाहरण दिया है। भारत में गेहूँ तथा ऊन का उत्पादन किया जाता है क्योंकि इनके उत्पादन के लिए जिस श्रेणी की भूमि की जरूरत होती है, वह भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अमेरिका में निर्मित वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है क्योंकि इनके उत्पादन में अधिक पूंजी की जरूरत होती है, जो अमेरिका में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और भारत में अल्प मात्रा में। अतः इन दोनों देशों में दोनों वस्तुओं की सापेक्षिक कीमतों में भिन्नता है अतः इन दोनों देशों में व्यापार होता है। भारत ऊन एवं गेहूँ का निर्यात अमेरिका को करता है जो उस देश में प्रचुरता से उपलब्ध है और जब वह निर्मित वस्तुओं का आयात करता है तो वह अप्रत्यक्ष रूप से उन साधनों का आयात करता है जो उसके देश में स्वल्प मात्रा में उपलब्ध हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि साधनों में विभिन्न अनुपातों के कारण एक क्षेत्र में कुछ वस्तुएं दूसरे क्षेत्र की तुलना में सस्ती होंगी। किन्तु केवल इसके कारण ही कीमतों का निर्धारण नहीं किया जासकता है कि दोनों क्षेत्रों के मध्य किन वस्तुओं का व्यापार होगा। यह उसी समय सम्भव है जब एक क्षेत्र में उत्पादित वस्तुओं की कीमतों की तुलना दूसरे क्षेत्र से किया जा सके। और यह तुलना उसी समय सम्भव है जब या तो दोनों क्षेत्रों में एक समान मुद्रा चलती हो अथवा विभिन्न मुद्रा होने पर दोनों मुद्राओं में विनिमय दर स्थापित कर ली गई हो।

Scanned with CamScanner